

84. H. 1493. Nib. 1, 13. प्रतीतिवगः पवनान्तमजः R. 5, 2, 46. श्याम इति (unter dem Namen श्याम) प्रतीतिः RAGH. 13, 53. सुप्रतीतिः SĪH. D. 1, 13. (विप्राः) प्रतीतिः MBH. 3, 10672. DRAUP. 4, 9. तं प्रतीतिं स्वधर्मेण (durch, wegen) M. 3, 3. गुणैः AK. 3, 1, 10. H. 437. — 2) der sich von der Wahrheit einer Sache überzeugt hat, zu einer festen Ueberzeugung gelangt, fest entschlossen KATHOP. 1, 10 (ÇAṆKAR. = लब्धस्मृतिः). तदचःप्रतीतिः HIT. 12, 2. तथापि नेच्छेयमिति प्रतीतिः MBH. 14, 241. — 3) befriedigt, froh, heiter AK. 3, 4, 84. MBH. 14, 283. R. 2, 42, 9. 4, 63, 19. 5, 95, 44. 6, 107, 25. RAGH. 3, 12. अत्रप्रतीति R. 2, 48, 18. 4, 22, 27. — 4) ehrerbietig TRIK. 3, 3, 169. Vgl. अत्रप्रतीति. — caus. प्रत्याययति 1) Jmd von der Wahrheit einer Sache überzeugen: बलवत्तु ह्यमानं प्रत्याययति मां कृद्व्यम् ÇĀK. 127. एष विवाद एव (v. l. hat noch मां) प्रत्याययति 106, 10. RAGH. 15, 73. KATHS. 22, 115. तदचनप्रत्याययितः PĀṆKĀT. 216, 23. Es ist hier प्रत्याययित zu lesen, da प्रत्याययित Vertrauen besitzend bedeutet und auf प्रत्यायय zurückzuführen ist. — 2) auf Etwas führen, an Jmd oder Etwas denken lassen, Etwas als das was es ist herausstellen, erkennen lassen: कलिङ्गः सार्कसिक इत्यादौ कलिङ्गादिशब्दे देशविशेषादत्रैव स्वार्थे ऽसम्भवन्वया शब्दस्य शत्र्या स्वसंयुक्तान्युरुपादौन्प्रत्याययति SĪH. D. 11, 3. यया प्रत्याययति 19, 7. प्रत्याययतिभिः प्रमाणैर्न परः प्रत्याययितुं शक्य (kann nicht bewiesen werden) घ्रागमेन तु शक्यत एव प्रत्याययितुम् ÇAṆKAR. III WIND. Sancara 106. प्रत्याययत्यर्थान् P. 2, 4, 46, Sch. — desid. प्रतीषिषति zu erkennen streben: अर्थान् P. 2, 4, 47, Sch. VOP. 19, 7.

— संप्रति zu einer festen Ueberzeugung gelangen; Glauben schenken: किं तत्कार्यं वेत्युपलब्धसंज्ञा विकल्पयतो ऽपि न संप्रतीयुः BHATT. 11, 10. इदं श्रेयः परमं मन्यमाना व्यायच्छते मुनयः संप्रतीताः MBH. 3, 12740. विशङ्का त्यज्यतामेषा वदतः संप्रतीहि मे R. 5, 31, 61. — संप्रतीति bewährt, bekannt, berühmt DRAUP. 5, 13.

— झ (= प्र), झायते P. 8, 2, 19, Sch.

— वि auseinandergehen, zerstreut gehen; sich zerstreuen, sich vertheilen; zerstreuen, vergehen, weichen: धनोर्धि विपुणक्ते व्यायन् RV. 4, 33, 4. 164, 38. वि पूर्वां देवस्य यत्पूतयो वि वाजोः 3, 14, 6. सन्निवे वियत्तः 4, 38, 9. त्वत्सौभागान् वि यति वानिनो न वयाः 6, 13, 1. 7, 43, 1. वि श्लोक एतु पृथेयं सुरैः 10, 13, 1 (vgl. ÇVETĀÇV. Up. 2, 5). 14, 9. 61. 6. 26. 27. हवींया इव ततोवा व्यस्मदैतु डर्मतिः 134, 5. 139, 4. AV. 3, 2, 4. 11, 5. येन देवा न विपति 30, 4. द्यावापृथिवी व्यैताम् VS. 14, 30. ÇAT. BR. 14, 2, 3, 17. TS. 3, 1, 1, 2. ये चत्वारः पथयो देवानां अत्ररा द्यावापृथिवी विपति 5, 7, 3. न वा एकानांरेण च्छ्दंति विपति न द्वाभ्याम् die Metra weichen nicht aus (in eine andere Form) durch eine Silbe oder zwei AIT. BR. 1, 6; vgl. ÇAT. BR. 7, 1, 2, 22. 12, 2, 3, 3. देवानां क्रोधो व्यैत 1, 7, 4, 1. भवं वीयाय 14, 4, 2, 3 (= BĀH. ĀR. Up. 1, 4, 2). यस्मिन्निदं सं च वि चैति सर्वम् ÇVETĀÇV. Up. 4, 11, 1. न किं चन वीयाय auch nicht das Geringste ist entschunden, verloren gegangen (von der Lehre) KHĀND. Up. 4, 9, 3. व्येतु वो मानसो ज्वरः MBH. 3, 8557. R. 1, 18, 1. partic. वीतं vergangen, geschwunden, gewichen: वीतमन्यु KATHOP. 1, 10. वीतशोक ÇVETĀÇV. Up. 2, 14. शोकभय M. 6, 32. 7, 64. ०मत्सर 11, 111. ०कल्मष 12, 22. BRĀHMAN. 1, 6. INDR. 4, 8. ARG. 10, 11. HIT. 19, 21. ÇĀK. 88. ad 78. वीतित्तरम् adv. ohne zu antworten AMAR. 19. — 2) durchgehen, durchschneiden im Gange: वि यामिपि RV. 1, 50, 7. क्वेच्छित्तुं मनसा विपतिः 10, 5, 3. उर्ध्वतरां रत्तं धीहि VS. 11, 15. वज्रेण

यज्ञमानस्य प्राणान्वायान् AIT. BR. 2, 21. — intens. dass.: येषां रथो व्यञ्च-दावन्वीयते RV. 5, 18, 3. इमा भुवनानि वीर्येति युजान इन्दो कुरितः सुयार्थः 9, 86, 37. — व्यययति verausgaben, welches Dhātup. 35, 78 auf व्यय्- zurückgeführt wird, ist ein denom. von व्यय. अयव्ययमान u. s. w. gehört zu व्या.

— अनुवि im Anschluss an Jmd sich trennen VS. 14, 30. ÇAT. BR. 6, 1, 1, 12. 8, 7, 3, 2. 10, 3, 3, 12.

— अभिवि sich vereinigen auf, zusammentreffen in: विश्वे देवाः समनम् सैकैता एकं क्रतुमभि वि यति साधु RV. 6, 9, 5.

— सम् 1) zusammenkommen, sich vereinigen (mit acc. des Vereinigungsortes; auch dat. und instr. bei einer Person); feindlich zusammentreffen RV. 1, 31, 10. समेतु ते वृद्ध्यम् 91, 16. 18. 2, 25, 3. समस्मभ्यं सूनयो पत्नु वाजोः 3, 30, 21. 5, 9, 5. 7, 1, 14. माष्टूकानो वमुरत्रा समैति 103, 2. 9, 72, 6. सं यति र्मितो रसाः 113, 5. 10, 17, 1. 27, 8. 88. 15. AV. 4, 11, 12. 15, 1. VS. 6, 20. 12, 57. संयत् RV. 2, 12, 8. 5, 37, 5. 9, 68, 3. AV. 16, 8, 22. तस्माद्वाष्ट्रं सं चैति वि च ÇAT. BR. 14, 2, 3, 17. KHĀND. Up. 4, 1, 4. ÇVETĀÇV. Up. 4, 11. यत्रा नरः समयते कृतधनाः RV. 7, 83, 2. सं यद्विशो ऽयत्त प्रूरसातो 6, 26, 1. 4, 119, 2. — पार्थिवः सर्वं समीयुस्तत्र MBH. 1, 6956. 6940. SĪV. 7, 1. R. 1, 44, 21. 5, 90, 4. KUMĀRAS. 7, 53. समिवाय धृतराष्ट्रेण MBH. 2, 2013. 3, 10829 (समेष्याम). 15764. N. 14, 22. 18, 18. DRAUP. 6, 16. 8, 49. R. 2, 100, 38. 5, 53, 29. RAGH. 8, 17. KATHS. 23, 169. रात्सौ कुरिमुव्याभ्यां समराय समीयतुः R. 6, 18, 15. sich geschlechtlich verbinden: मार्गारा द्वीपिभिः सार्धं प्रूकराश्च श्चभिः सक्तु । किन्नेयां रात्सैश्चैव समीयुर्मानुषैः सक्तु ॥ 11, 40. auch mit dem acc.: न त्वामकामां समेष्ये MBH. 3, 16193. — 2) kommen, herbeikommen; besuchen, aufsuchen, gelangen zu; betreten; antreten: अयप्रभृति — प्रतिदिनमेका भक्तार्थं समेष्यति PĀṆKĀT. 53, 23. तदान्यो ऽपि कश्चिन्नास्य समीपे साधुजनः समेष्यति 92, 16. वदाप्यस्याः पृष्ठतः को ऽपि समेष्यति wird sie verfolgen 226, 12. 260, 19. यस्य हेतोर्विनितारं समेष्ये MBH. 3, 10675. वङ्गीरश्चस्य स्वर्धितिः समेति RV. 1, 162, 18. मेधाः संयत्तु पृथिवीम् AV. 4, 13, 8. उद्योगिनं सततमत्र समेति लक्ष्मीः PĀṆKĀT. I, 221. देवां अक्को पृथ्याइ का समेति welcher Weg führt zu den Göttern? RV. 3, 34, 5. यज्ञं हि संयति ÇAT. BR. 8, 6, 1, 19. नो चेदाभ्यां कृतो मृत्युपथं समेष्यसि PĀṆKĀT. 220, 12. तौ मिथुनं समेताम् ÇAT. BR. 14, 4, 3, 19. वाङ्गयुद्धम् einen Faustkampf beginnen MBH. 4, 348. — pass. besucht, aufgesucht werden: असनैः समीयमानः PĀṆKĀT. I, 84. — 3) unter Jmd (gen.) über Etwas (loc.) zur Entscheidung kommen; mit dem loc.: ते ह वैश्वानरे समासत तेषां ह वैश्वानरे न समिवाय iis de Vaiçvānaro non convenit ÇAT. BR. 10, 6, 1, 1. — Vgl. असंयत्. — partic. समित 1) versammelt MBH. 3, 10651. — 2) verbunden mit: सीतया समितं क्षेत्रम् P. 4, 4, 91. खादिरान्वित्वस-मितान् MBH. 14, 2630. — समीयिवान् P. 3, 2, 69. — intens. besuchen: हू-तो देवानां रंजीसो समीयसे RV. 6, 15, 9. सं हूतो अयं इयसे हि देवान् 7, 3, 3. — अतिसम् hinaufgelangen zu (acc.); पत्नी हू भूवाति दिवः समेति AV. 4, 34, 4.

— अनुमम् 1) zusammen, der Reihe nach aufsuchen, besuchen: ब्रह्म-चारिणीं पितरौ देवगणाः पृथग्देवा अनुसंयति सर्वं AV. 11, 3, 2. वयोस्येना-नुसंयत्तु सवान् SV. II, 9, 3, 6, 1. — 2) sich zusammen nach Etwas richten: यस्य देवा अनुसंयति चेतम् TAIT. BR. 3, 1, 1, 9. — 3) in Etwas über-gehen, zu Etwas werden; स्वाणान्ये ऽनुसंयति KATHOP. 5, 7.